पर्यावरणीय समस्याएँ एवं निराकरण

डॉ. पूजा वरूण
सहायक आचार्य (राजनीति विज्ञान)
स. ध. राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर

पर्यावरण का सरलार्थ है, 'वह जो परिवेशित करता है।' पर्यावरण प्रकृति का वह भाग है जो किसी जीव या जीव समुदाय को परिवृत्त करता है। वेबस्टर के शब्दों में " Environment is the sum total of all internal conditions and influences affecting the life and development of organisms " अर्थात् प्राणियों के जीवन एवं विकास को प्रभावित करने वाले सभी बाह्य प्रभावों एवं दशाओं का समुच्चय पर्यावरण है। विश्व शब्दकोश के अनुसार " पर्यावरण उन सभी दशाओं, प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवों व उनकी प्रजातियों के विकास, जीवन एवं मृत्यु को प्रभावित करता हैं।"

पर्यावरणीय कारक :– पर्यावरणीय कारकों को दो भागों में विभाजित किया गया हैं :–

(1) जैविक कारक (2) अजैविक कारक

जैविक कारक :– प्रकृति में कोई भी जीव पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं है, सभी किसी–न–किसी रूप में एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं। अतः पारिस्थितिक तंत्र के जैविक घटक – पेड़–पौधे जन्तु तथा मानव परस्पर कारकों की तरह व्यवहार करते हैं, इसलिए इन्हें जैविक कारक कहा जाता हैं।

अजैविक कारक :– के अन्तर्गत भौतिक कारक (प्रकाश, ताप, विकिरण, गुरूत्व) रासायनिक कारक (मिट्टी, जल, गैस) तथा वातावरणीय कारक (वायुमण्डल, अग्नि) आते हैं।

पर्यावरण संकट के कारण :–

पारिस्थितिकी तंत्र में अस्थिरता एवं परिणाम स्वरूप वातावरण ह्रास का संकट उपस्थित होने का प्रमुख कारण जनसंख्या में अभूतपूर्व वृद्धि माना जाता है। विकसित देशों में उच्च उपयोग स्तर के कारण ; जिससे जैव भू रासायनिक चक्रों की क्रियाशीलता पर कुप्रभाव पड़ता है, परिणामस्वरूप मिट्टी अपरदन, सूखा, मरूभूमि का प्रसार, जल प्रदूषण, बाढ़ आदि अनेक समस्याएँ विकट हो रही है।

जनसंख्या की वृद्धि ही पर्यावरण के ह्रास एवं पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन का कारण नही है। जनसंख्या की गुणवत्ता पर भी यह निर्भर है कि संसाधनों का उपयोग करते समय पारिस्थितिकी सन्तुलन बनाये रखने पर सजग है या नहीं।

जन सामान्य की निर्धनता की पारिस्थितिकी अस्थिरता एवं असन्तुलन को बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान करती है। UNEP के निदेशक के अनुसार विश्व की दो–तिहाई जनसंख्या निर्धनता तथा संसाधन क्षरण (जो पारिस्थितिकी तंत्र में असन्तुलन का परिणाम है) के दुष्चक्र में फंसी है।

निर्धनता मूलतः विश्व में आर्थिक विकास में व्याप्त असमानता की उपज हैं।

WCED की रिपोर्ट our common future के अनुसार Inequality is the Planet's main environmental problem : it is also its main development problem अर्थात् समानता विश्व की प्रमुख वातावरण समस्या है, यही प्रमुख विकास समस्या भी है।

उच्च भौतिक जीवन स्तर को प्राप्त करने की लालसा ने तरह–तरह के भौतिक कृत्रिम साधनों के उत्पादन को बढ़ावा दिया है। फलस्वरूप, पारिस्थितिकी तंत्र को सुस्थिर एवं सन्तुलित रखने वाले जैव भू रासायनिक चक्रों पर दबाव बढ़ता जाता है।

औद्योगिक विकास के कारण विभिन्न जहरीले रसायन नदियों में छोड़ दिए जाते है जिससे जल प्रदूषित हो जाता है। औद्योगिक प्राविधिक विकास, नगरीकरण एवं कारखानों का केन्द्रीकरण पारिस्थितिकी तंत्र पर अत्यधिक दबाव डालता है और औद्योगीकरण प्राविधिक विकास, नगरीकरण भौतिक जीवन स्तर को उठाने के प्रयास के ही परिणाम हैं।

पर्यावरणीय समस्याएँ :– वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जलवायु परिवर्तन के कारण कई पर्यावरणीय समस्याओं का जन्म हुआ, जिसमें विश्व तापमान में वृद्धि और हरित गृह प्रभाव का जन्म हुआ। विश्वव्यापी तापन की द्रुत गति से होता रहा तो, जलीय क्षेत्रों के आसपास की जैव विविधता को खतरा उत्पन्न हो सकता है। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार "वायुमण्डल में मानवजनित कार्बन–डाई–ऑक्साइड के आवरण प्रभाव के कारण पृथ्वी की सतह की दुगामी तापन को हरित गृह प्रभाव कहते हैं।"

अम्ल वर्षा शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ब्रिटेनवासी स्मिथ ने किया था। प्राकृतिक वर्षा का जल हवा में उपस्थित प्रदूषणों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप अम्लीय हो जाता है, तो इसे अम्लीय वर्षा कहते हैं। अम्ल वर्षा के कारण विभिन्न जल क्षेत्रों, झीलों, तालाबों आदि के जलीय जीवों की मृत्यु तक हो जाती है, इसलिए अम्ल वर्षा को झील कातिल कहना भी उचित होगा।

समताप मण्डल में उपस्थित ओजोन गैस की मोटी परत का क्षीण होना को ओजोन छिद्र कहते हैं। ओजोन परत के क्षीण होने पर सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणें मानव त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है एवं त्वचा कैंसर होने की सम्भावना अधिक रहती हैं।

निराकरण :– विभिन्न समस्याओं को देखते हुए कुछ समाधान करना भी आवश्यक है। सर्वप्रथम वन विनाश को पूर्णतया प्रतिबन्धित करके, कार्बन–डाई–ऑक्साइड की बढ़ती मात्रा को कम किया जा सकता है। जीवाश्म ईंधन का उपयोग सीमित हो, व्यक्तिगत ऊर्जा व्यय में खपत की मात्रा कम हो।

ओजोन पर विपरीत प्रभाव डालने वाले उत्पादकों को प्रतिबन्धित किया जाना चाहिए साथ ही सीसे रहित पेट्रोल के प्रयोग पर बल दिया जाए तथा क्लोरो–फ्लोरो कार्बन के विकल्पों की खोज, उत्पादन व उपयोग अधिक मात्रा में करना चाहिए।

सन्दर्भ :–

1. डॉ. मिश्रा महेन्द्र कुमार : भारत में पर्यावरण : समस्याएँ और समाधान, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर।
2. डॉ. शर्मा वन्दना एवं जोशी सुलेखाः पर्यावरण अध्ययन, रोहिणी बुक्स प्रकाशन एवं वितरक, जयपुर
3. डॉ. सिंह राजेन्द्र : पर्यावरणीय अध्ययन, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ
4. डॉ. कस्वाँ एन.आर. : मानव और पर्यावरण मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर
5. डॉ. कौशिक एस.डी. एवं गर्ग कुलदीप : संसाधन एवं पर्यावरण, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ
6. डॉ. नेगी पी.एस. : पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ
7. डॉ. गुर्जर रामकुमार एवं जाट बी.सी. : संसाधन एवं पर्यावरण, पंचशील प्रकाशन, जयपुर